ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
खंड-1, अंक-2 अक्टूबर-मार्च, 2025-26, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय के संदर्भ में पुरातात्त्विक एवं ऐतिहासिक डिजिटल स्रोतों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

मनोज कुमार सक्सेना
वरिष्ठ प्राध्यापक, शिक्षा स्कूल
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला
एवं
आशीष कुमार
शोधार्थी, शिक्षा विभाग
हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

सारांश

प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय प्रथम आवासीय एवं संगठित विश्वविद्यालयों में से एक था। तीसरी शताब्दी से 13 वीं शताब्दी तक एशिया में शिक्षा, दर्शन, बौद्ध अध्ययन तथा वैज्ञानिक ज्ञान के विकास रूप में प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य नालंदा विश्वविद्यालय की शिक्षा व्यवस्था, शैक्षणिक परंपरा, संरचनात्मक स्वरूप एवं अंतरराष्ट्रीय बौद्धिक प्रभाव को विभिन्न ऐतिहासिक और पुरातात्त्विक स्रोतों के माध्यम से समझना है। इसके साथ ही यह शोध यह भी समझने का प्रयास करता है कि आधुनिक डिजिटल अभिलेखागार और स्रोतों के माध्यम से नालंदा की ऐतिहासिक विरासत को किस प्रकार संरक्षित और पुनः व्याख्यायित किया जा सकता है। इस शोध अध्ययन में प्रमुख रूप से यात्रा-वृत्तांत, अभिलेखीय स्रोत, पुरातात्त्विक उत्खनन रिपोर्ट, संग्रहालय अभिलेख तथा आधुनिक शोध ग्रंथों का उपयोग किया गया है। विशेष रूप से चीनी यात्रियों ह्वेनसांग और इत्सिंग के विवरण, नालंदा के ताम्रपत्र अभिलेख, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की उत्खनन रिपोर्ट एवं आधुनिक इतिहासकारों के शोध इस अध्ययन के प्रमुख स्रोत रहे हैं। इन स्रोतों के तुलनात्मक और विश्लेषणात्मक अध्ययन से नालंदा विश्वविद्यालय की ऐतिहासिक संरचना और शैक्षणिक प्रणाली के विभिन्न आयामों को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय, भारतीय शिक्षा परंपरा की उत्कृष्टता और वैश्विक दृष्टिकोण का प्रतीक रहा है। साथ ही डिजिटल स्रोतों और आधुनिक शोध के माध्यम से नालंदा की ऐतिहासिक संस्कृति को संरक्षित करना और उसे समकालीन शैक्षणिक विमर्श से जोड़ना अत्यंत आवश्यक है। इस प्रकार यह अध्ययन नालंदा विश्वविद्यालय के ऐतिहासिक महत्व को समझने के साथ-साथ उसके ज्ञान परंपरा के पुनर्स्मरण और संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण योगदान प्रस्तुत करता है।

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
खंड-1, अंक-2 अक्टूबर-मार्च, 2025-26, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

बीज शब्द : नालंदा विश्वविद्यालय, ऐतिहासिक डिजिटल स्रोत

प्रस्तावना

प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय उत्तर-पूर्वी भारत के बिहार राज्य में स्थित है। यह विश्वविद्यालय तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से लेकर 13वीं शताब्दी ईसवी तक के एक मठ और शैक्षिक संस्थान के पुरातात्विक अवशेषों को सहेजे हुए है। इस प्राचीन विश्वविद्यालय में स्तूप, मंदिर, आवासीय परिसर, शैक्षिक भवन एवं महत्वपूर्ण कलाकृतियां शामिल हैं, जो महीन चूने, पत्थर और धातु से निर्मित हैं। नालंदा भारतीय उपमहाद्वीप के सबसे प्राचीन विश्वविद्यालय के रूप में विद्यमान है। यह 800 वर्षों की निरंतर अवधि के दौरान ज्ञान के सुनियोजित प्रसार में लगा रहा। इस स्थल का ऐतिहासिक विकास बौद्ध सम्प्रदाय के एक धर्म के रूप में विकसित होने तथा मठ-संबंधी और शैक्षिक परंपराओं के प्रसार का प्रमाण प्रस्तुत करता है(यूनेस्को, 2016)। प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय की ख्याति विद्या के महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में थी, इसका इतिहास लगभग 450 ई. से प्रारंभ होता है। 410 ई. में विदेशी यात्री फाहियान ने नालंदा की यात्रा की थी। नालंदा विश्वविद्यालय के विकास में गुप्त राजाओं का सबसे ज्यादा योगदान रहा था। शक्रादित्य-सम्भवतः प्रथम कुमार गुप्त (414-455 ई.) ने एक विहार के निर्माण तथा दान से नालंदा की महत्ता का श्री गणेश किया था(भारती,2002)। अन्य विदेशी यात्री में हेनसांग ने अपने यात्रा-वृतांत में नालंदा महाविहार को 700 वर्ष पुराना माना है(हवलदार,1959)। सम्राट हर्ष ने नालंदा की अभिवृद्धि के लिए 100 गांवों का कर नालंदा महाविहार को दिया था। उन्होंने पीतल की परतों वाले एक विहार का निर्माण भी करवाया था। नालंदा के ताम्र पत्र अभिलेख में पाल रजा देवपाल के शासनकाल में सुवर्ण द्वीप के राजा बालदेव पुत्र द्वारा नालंदा विहार के निर्माण का उल्लेख मिलता है-

नालंदा गुणवृन्दलुब्धमनसा भक्त्या च
शौद्धोदनेर्बुध्वाशैलसरित्तरंगतरलां लक्ष्मीमिमां शोभनाम् ।
यसतेनोंन्नसोधधामध्वल: संधार्थमित्रश्रिया
नानासद्गुणा भिक्खु संघ वस्तिस्त स्याम्विहार: कृत : । ।

अर्थात नालंदा के गुणों से लुब्ध होकर लक्ष्मी के चंचल स्वभाव को जानकर तथा शौद्धोदन की भक्ति को जानकर बनवाया था (भारद्वाज, 2020)। इस प्रकार से नालंदा के पुरातात्विक इतिहास को समझा जा सकता है ।

प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय विश्व की प्राचीनतम और श्रेष्ठ उच्च शिक्षा परंपराओं में से एक रहा है, जिसकी शैक्षिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक विशिष्टता आज भी वैश्विक स्तर पर शोध का विषय बनी हुई है। नालंदा से संबंधित अनेक पुरातात्त्विक और ऐतिहासिक स्रोत विभिन्न पटल पर उपलब्ध हैं, परंतु इन स्रोतों का वैज्ञानिक और तर्कसंगत विश्लेषण करके एक समग्र दृष्टिकोण विकसित करने की आवश्यकता आज भी बनी हुई है। विशेष रूप से डिजिटल तकनीकों के तीव्र विकास ने शोध के नए आयाम खोले हैं, जिनका उपयोग प्राचीन स्थलों और ऐतिहासिक तथ्यों के अधिक सटीक

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
खंड-1, अंक-2 अक्टूबर-मार्च, 2025-26, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

और प्रमाणिक अध्ययन में किया जा सकता है। नालंदा विश्वविद्यालय एक ऐसा ऐतिहासिक स्थल है, जहाँ पारंपरिक और डिजिटल दोनों प्रकार के साक्ष्यों की प्रचुरता मौजूद है, इसलिए यह अध्ययन डिजिटल पुरातत्त्व और डिजिटल इतिहास के माध्यम से प्राचीन भारत की शिक्षा प्रणाली और स्थापत्यिक परंपरा को नए दृष्टिकोण से समझने में अत्यंत उपयोगी सिद्ध होता है। नालंदा विश्व धरोहर स्थल (यूनेस्को, 2016) होने के कारण इसके संरक्षण, पुनर्निर्माण और वैश्विक स्तर पर प्रस्तुतीकरण में भी डिजिटल डेटा महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। डिजिटल स्रोतों का विश्लेषण न केवल नालंदा के इतिहास को अधिक स्पष्ट करता है, बल्कि वर्तमान में चल रहे संरक्षण कार्यों की व्यावहारिक दिशा को भी मजबूत आधार प्रदान करता है। इस प्रकार डिजिटल स्रोतों के आधार पर नालंदा विश्वविद्यालय का विश्लेषण करना न केवल शोध की दृष्टि से आवश्यक है, बल्कि यह भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा को आधुनिक तकनीकी संदर्भों में समझने और प्रस्तुत करने का एक प्रभावी और वैज्ञानिक माध्यम भी प्रदान करता है। यही इस शोध अध्ययन को प्रासंगिक, आवश्यक और युगानुकूल बनाता है।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

कुमारी (2025) ने बिहार के शिक्षा में नालंदा विश्वविद्यालय का योगदान : एक अध्ययन पर शोध पत्र लिखा। इन्होंने अपने शोध अध्ययन के निष्कर्ष में बताया कि नालंदा विश्वविद्यालय ने बिहार की शिक्षा को विश्वस्तरीय आयाम दिया। आज भी इसकी धरोहर हमें प्रेरित करती है कि शिक्षा केवल नौकरी या आर्थिक उन्नति का साधन नहीं बल्कि मानवीय मूल्यों, अनुसंधान, सृजनात्मकता और वैश्विक बौद्धिक आदान-प्रदान का माध्यम हो। नालंदा विश्वविद्यालय का योगदान यह दर्शाता है कि शिक्षा के क्षेत्र में बिहार का इतिहास गौरवशाली रहा है और भविष्य में भी यह परंपरा नए रूप में आगे बढ़ सकती है।

शंकर और शर्मा (2025) ने प्राचीनकालीन नालंदा एवं विक्रमशिला विश्वविद्यालय में ज्ञान परंपरा और बौद्ध धर्म का प्रभाव : एक ऐतिहासिक अध्ययन, शीर्षक पर शोध आलेख लिखा। इन्होंने अपने शोध आलेख में बताया कि प्राचीन भारत में शिक्षा प्रदान करने वाले नालंदा एवं विक्रमशिला यह दो शिक्षा के महत्वपूर्ण केंद्र थे। इतिहास स्रोतों और विदेशी यात्रियों के यात्रा वृतांतों में वर्णन है कि इन दोनों विश्वविद्यालयों में भारत ही नहीं, वरन सुदूरवर्ती श्याम, अनाम, सिंहल, चीन, जापान, तातार, मध्य-एशिया तिब्बत, वर्मा, मलय, आदि अनेक देशों से विद्यार्थी ज्ञानार्जन हेतु आते थे। जहां एक ओर नालंदा महाविहार बौद्ध धर्म की महायान शाखा का प्रसिद्ध केंद्र बनकर उभरा, वहीं विक्रमशिला महाविहार तांत्रिक-विद्या तथा वज्रयान बौद्धमत के प्रचार का प्रमुख केंद्र बना।

शर्मा (2024) ने प्राचीन भारत में शिक्षा प्रणाली नालंदा एवं तक्षशिला विश्वविद्यालय पर शोध पत्र लिखा। इन्होंने अपने शोध पत्र में निष्कर्ष के रूप में बताया कि प्राचीन भारत की शिक्षा प्रणाली ने नैतिक, बौद्धिक, और व्यावहारिक

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
खंड-1, अंक-2 अक्टूबर-मार्च, 2025-26, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

शिक्षा का एक अद्वितीय समन्वय प्रस्तुत किया, जो न केवल विद्या अर्जन, बल्कि चरित्र निर्माण और समाज के प्रति उत्तरदायित्व को भी प्रोत्साहित करती थी। तक्षशिला और नालंदा जैसे प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों ने वैश्विक स्तर पर ज्ञान के आदान-प्रदान को बढ़ावा दिया और बौद्ध धर्म, राजनीती, चिकित्सा, तथा अन्य विषयों में गहन अध्ययन के केंद्र बने। इस प्रकार प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य मात्र शैक्षिक योग्यता नहीं, बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में समग्र विकास करना था।

कुमारी और मंडल (2023) ने प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति एवं नालंदा विश्वविद्यालय पर शोध पत्र लिखा। इन्होंने अपने शोध पत्र के निष्कर्ष में बताया कि नालंदा विश्वविद्यालय के शैक्षणिक व्यवस्था, पाठ्यक्रम, प्रशासनिक व्यवस्था, सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन के महत्व के बारे में जितनी प्रशंसा की जाये उतनी कम है। आज भारत में वर्तमान समय में अगर देखा जाय तो प्राचीन काल की तरह ही शिक्षा को महत्व दिया गया है। शिक्षा प्राप्त करने के लिए अनेक शैक्षणिक संस्थाओं को वो प्रसिद्धि नहीं प्राप्त है जो आज से लगभग 15 सौ वर्ष पहले नालंदा जैसे शैक्षणिक केंद्रों को प्राप्त था।

सिंह (2021) ने नालंदा विश्वविद्यालय का ऐतिहासिक अनुशीलन विषय पर शोध पत्र लिखा। इन्होंने अपने शोध पत्र के निष्कर्ष में बताया कि नालंदा विश्वविद्यालय लगभग 800 वर्षों तक आस्तित्व में बना रहा परन्तु अनपढ़, असभ्य एवं बर्बर जाति के अतातायी शासकों ने इस प्राचीन धरोहर को समाप्त कर दिया। स्थानीय लोगों का मानना है कि यह विश्वविद्यालय लगभग छ महीने तक जलता रहा। इससे स्पष्ट हो जाता है कि यह विश्वविद्यालय निश्चित रूप से न केवल भारत बल्कि सम्पूर्ण विश्व के लिए शिक्षा का महत्वपूर्ण केंद्र था।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय से संबंधित उपलब्ध पुरातात्विक डिजिटल स्रोतों का अध्ययन करना।
2. प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय की शैक्षिक संरचना को डिजिटल साक्ष्यों के आधार पर अध्ययन करना।
3. शिक्षा प्रणाली में पुनर्निर्मित नालंदा विश्वविद्यालय की भूमिका का अध्ययन करना।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध पत्र प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय से संबंधित पुरातात्विक डिजिटल स्रोतों पर आधारित है। इसमें आर्काइव पर उपलब्ध विद्वानों की रचनाएं, यूनेस्को पर उपलब्ध दस्तावेज़ एवं नालंदा विश्वविद्यालय से संबंधित अधिकारिक जानकारी का उपयोग किया गया है। साथ ही इन तथ्यों का वर्णनात्मक अध्ययन भी किया गया है। साथ ही तुलनात्मक पद्धति के द्वारा प्राचीन एवं आधुनिक शिक्षा प्रणाली के मध्य संबंधों का भी विश्लेषण किया गया है।

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
खंड-1, अंक-2 अक्टूबर-मार्च, 2025-26, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

विश्लेषण

अभिलेखागार, उत्खनन रिपोर्ट, एवं डिजिटल मैपिंग

चित्र 1

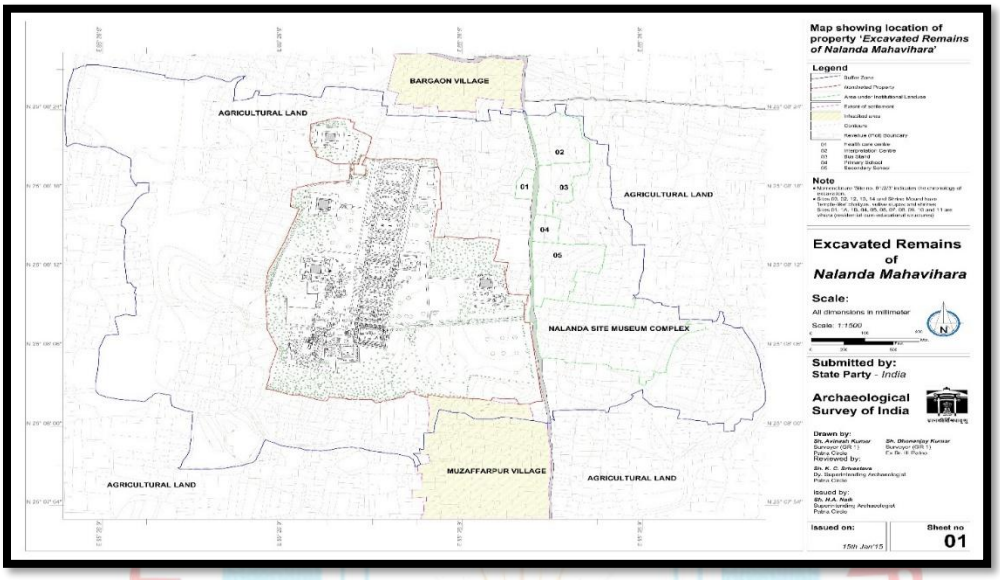

चित्र 2

चित्र 1 एवं 2 से यह स्पष्ट होता है कि नालंदा महाविहार एक सुव्यवस्थित और विस्तृत शैक्षणिक परिसर था। मानचित्र में दर्शाया गया क्षेत्र बताता है कि विश्वविद्यालय के परिसर में अनेक विहार, मंदिर, स्तूप एवं अध्ययन कक्ष व्यवस्थित रूप से निर्मित थे। उत्खनन से प्राप्त विश्वविद्यालय के अवशेष यह प्रमाणित करते हैं कि यहाँ एक संगठित आवासीय शिक्षा प्रणाली विद्यमान थी जहां हजारों विद्यार्थी और आचार्य एक साथ अध्ययन-अध्यापन और शोध करते थे।

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
खंड-1, अंक-2 अक्टूबर-मार्च, 2025-26, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

विश्वविद्यालय संरचना से यह भी ज्ञात होता है कि भवनों का निर्माण उत्तर-दक्षिण अक्ष के आधार पर योजनाबद्ध ढंग से किया गया था जिससे शैक्षिक और आवासीय व्यवस्था व्यवस्थित बनी रहती थी। यह विश्वविद्यालय लगभग तीसरी शताब्दी से लेकर 13वीं शताब्दी तक एशिया का प्रमुख ज्ञान केंद्र के रूप में रहा था। यहां चीन, कोरिया, तिब्बत तथा दक्षिण-पूर्व एशिया से विद्यार्थी अध्ययन करने आते थे। आज इसके उत्खनित अवशेष भारत की प्राचीन शिक्षा परंपरा और बौद्धिक संस्कृति विरासत के महत्वपूर्ण पुरातात्त्विक प्रमाण माने जाते हैं।

प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय से संबंधित पुस्तकें एवं अभिलेखों का विवरण

क्र. सं.	**पुस्तक एवं अभिलेखीय स्रोत**	**रचनाकार एवं प्राधिकरण**	**प्रस्तुत स्रोत के प्रकार**	**नालंदा से संबंधित प्रमुख तथ्यों का विवरण**	**संरक्षण स्थान एवं इसकी उपलब्धता**
1	रिकॉर्ड ऑफ़ द वेस्टर्न रेजिओंस (Da Tang Xiyu ji)	ह्वेनसांग(7 वी.शताब्दी सी.ई.)	यात्रा-वृत्तांत	नालंदा की शिक्षा व्यवस्था, आचार्य, विद्यार्थी संख्या व धर्मगंज पुस्तकालय का वर्णन	चाइना आर्काइव, विश्वविद्यालय पुस्तकालय
2	ए रिकॉर्ड ऑफ़ द बुद्धिस्ट रिलिजन अस प्रक्टिसेड इन इंडिया एंड द मलय अर्चिपेलागो भारत एवं मलय देशों में बौद्ध धर्म	इत्सिंग (yijing (7^{th} century CE))	धार्मिक विवरण	नालंदा के भिक्षु जीवन, अनुशासन व परीक्षा प्रणाली का वर्णन	एशियाई पांडुलिपि संग्रह, मॉडर्न पुब्लिशेड एडिशन
3	नालंदा ताम्रपत्र अभिलेख	पाल वंश ($c.9^{th}$ century)	अभिलेख	राजाश्रय व भूमि दान का उल्लेख	भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण संग्रह, नालंदा संग्रहालय
4	नालंदा शिलालेख	विभिन्न दाता	शिलालेख	भिक्षु, दाता व काल निर्धारण	नालंदा संग्रहालय,भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण संग्रह
5	भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा नालंदा उत्खनन रिपोर्ट (1915-1937)	भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण	पुरातात्त्विक रिपोर्ट	विहार, मंदिर व मूर्तियों का विवरण	भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण पुस्तकालय,

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
खंड-1, अंक-2 अक्टूबर-मार्च, 2025-26, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

					डिजिटाइज्ड सरकारी रिपोर्ट
6	नालंदा संग्रहालय सूची	भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण / बिहार सरकार	संग्रहालय अभिलेख	प्रतिमाएँ व दैनिक उपयोग की वस्तुएँ	नालंदा संग्रहालय
7	यूनेस्को नामांकन दस्तावेज (नालंदा महाविहार)	यूनेस्को, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण	विरासत दस्तावेज	मानचित्र, विश्व धरोहर विवरण	यूनेस्को डिजिटल संग्रह
8	प्रारंभिक गाइड बुक्स और साईट मैनुअल्स ऑफ़ नालंदा	भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण एवं संदर्भित विद्वान	मार्गदर्शिका	स्थल योजना व प्रारंभिक शोध	डिजिटल राष्ट्रीय पुस्तकालय और आर्काइव
9	कॉमन आर्काइवल रिसोर्स सेंटर, (डिजिटल अभिलेख) नालंदा विश्वविद्यालय	नालंदा विश्वविद्यालय	डिजिटल अभिलेख	नालंदा और बुद्धिज़्म से संबंधित डिजिटल शोध सामग्री	कॉमन आर्काइवल रिसोर्स सेंटर, डिजिटल रिपॉज़िटरी
10	आधुनिक शोध ग्रंथ	आर.एस. शर्मा, एच.डी. संकलिया, डी.सी सिकार आदि	द्वितीयक स्रोत	समालोचनात्मक अध्ययन	विश्वविद्यालय पुस्तकालय एवं शोध के आंकडें

आर्काइव पर उपलब्ध नालंदा विश्वविद्यालय से संबंधित स्रोत

क्र. सं.	रचनाकार	ग्रंथ
1.	प्यारे लाल रावत	प्राचीन से आधुनिक भारतीय शिक्षा का इतिहास
2.	हसमुख डी. संकलिया	द यूनिवर्सिटी ऑफ़ नालंदा
3.	संतोष कुमार दास	द एजुकेशन सिस्टम ऑफ़ द एन्सेंट
4.	प. बलदेव उपाध्य	बौध दर्शन
5.	शमन ह्वुई ली	द लाइफ ऑफ़ ह्वेनसांग

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
खंड-1, अंक-2 अक्टूबर-मार्च, 2025-26, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

6.	शमूएल बेल	बुद्धिस्ट रिकार्ड्स ऑफ़ द वेस्टर्न वर्ल्ड
7.	श्री गोपाल दास एवं कमलाकर तिवारी	प्राचीन भारत की सभ्यता का इतिहास
8.	डॉ. गोविंद चंद्र पाण्डेय	बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास
9.	श्री हवलदार त्रिपाठी	बौद्धधर्म और बिहार
10.	थॉमस वात्तेर्स	ओन युआन च्वांग'स ट्रेवल्स इन इंडिया
11.	राधा कुमुद मूकेर्जी	एन्सेंट इंडियन एजुकेशन
12.	जी.सी चौले	नालंदा पास्ट एंड प्रजेंट
13.	बी. नाथ	नालंदा मुरल्स
14.	हीरानंद शास्त्री	नालंदा एंड इट्स अपिग्रफिक मटेरियल
15.	ऐ. एस. अल्टेकर	एजुकेशन इन एंसेंट इंडिया

प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय की शैक्षिक प्रणाली एवं पाठ्यक्रम

चीनी यात्रियों ह्वेनसांग की "Record of the Western Regions (Da Tang Xiyu Ji)" तथा इत्सिंग की "A Record of the Buddhist Religion as Practised in India and the Malay Archipelago" में नालंदा विश्वविद्यालय की उन्नत शिक्षा व्यवस्था का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है। इन यात्रा-वृत्तांतों से ज्ञात होता है कि नालंदा में शिक्षा अत्यंत व्यवस्थित और उच्च स्तर की थी जहां विद्यार्थियों को कठोर बौद्धिक प्रशिक्षण दिया जाता था। बौद्ध दर्शन के साथ-साथ व्याकरण, तर्कशास्त्र, चिकित्सा, गणित, खगोल विज्ञान तथा भाषा अध्ययन जैसे विविध विषय पढ़ाए जाते थे। इस प्रकार नालंदा की शिक्षा प्रणाली बहुविषयी स्वरूप की थी। आर.के. मुखर्जी की "Ancient Indian Education" एवं ए.एस. अल्टेकर की "Education in Ancient India" भी इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि नालंदा केवल धार्मिक शिक्षा का केंद्र नहीं था अपितु व्यापक ज्ञान-विज्ञान का प्रमुख संस्थान था। इन ग्रंथों के अनुसार यहां प्रवेश प्राप्त करना अत्यंत कठिन था और विद्यार्थियों को कठोर बौद्धिक परीक्षा से गुजरना पड़ता था। अध्ययन प्रक्रिया में वाद-विवाद, तर्क-वितर्क तथा शास्त्रार्थ की महत्वपूर्ण भूमिका थी। इस प्रकार उपलब्ध स्रोत यह दर्शाते हैं कि नालंदा प्राचीन भारत की उन्नत विश्वविद्यालयीय शिक्षा प्रणाली का एक उत्कृष्ट उदाहरण के रूप था।

भिक्षु जीवन, अनुशासन एवं शैक्षणिक परंपरा

इत्सिंग के यात्रा-वृत्तांत से नालंदा विश्वविद्यालय में निवास करने वाले भिक्षुओं और विद्यार्थियों के दैनिक जीवन तथा अनुशासन से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। उनके विवरणों के अनुसार नालंदा में हजारों भिक्षु और विद्यार्थी एक संगठित व्यवस्था के अंतर्गत अध्ययन और शोध कार्य में संलग्न रहते थे। यहां का जीवन अत्यंत

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
खंड-1, अंक-2 अक्टूबर-मार्च, 2025-26, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

अनुशासित और संयमित था जिसमें अध्ययन, ध्यान, वाद-विवाद एवं धार्मिक आचरण को विशेष महत्व दिया जाता था। भिक्षु और विद्यार्थी दिनचर्या के अनुसार अध्ययन करते थे तथा गुरुजन के मार्गदर्शन में विभिन्न विषयों का गहन अध्ययन करते थे। संतोष कुमार दास की पुस्तक "The Education System of the Ancient Nalanda" में भी इस अनुशासनात्मक व्यवस्था का उल्लेख मिलता है। इस अध्ययन के अनुसार नालंदा में नैतिक मूल्यों और बौद्धिक प्रशिक्षण का संतुलित समन्वय प्रदर्शित होता है। यहां गुरु-शिष्य परंपरा के साथ सामूहिक अध्ययन और संवाद की समृद्ध परंपरा विकसित थी। इस प्रकार प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय केवल एक शैक्षणिक संस्था नहीं अपितु एक सुव्यवस्थित बौद्धिक और आध्यात्मिक समुदाय के रूप में कार्य करता था।

विश्वविद्यालय का राजकीय संरक्षण एवं आर्थिक आधार

प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय के विकास और स्थायित्व में राजकीय संरक्षण की महत्वपूर्ण भूमिका थी। नालंदा से प्राप्त ताम्रपत्र अभिलेखों और शिलालेखों से यह जानकारी मिलती है कि विभिन्न राजाओं और शासकों ने इस विश्वविद्यालय को आर्थिक सहायता और भूमि दान प्रदान किया था। विशेष रूप से पाल वंश के शासकों ने नालंदा के संरक्षण और विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। हीरानंद शास्त्री की "Nalanda and Its Epigraphic Material" में इन अभिलेखीय स्रोतों का विस्तृत विश्लेषण किया गया है, जिससे नालंदा के प्रशासनिक और आर्थिक ढांचे के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। जी.सी. चौले की "Nalanda Past and Present" में भी यह उल्लेख मिलता है कि नालंदा की व्यवस्था राज्य और समाज दोनों के सहयोग से संचालित होती थी। इन अभिलेखों से यह भी स्पष्ट होता है कि नालंदा के संचालन के लिए नियमित रूप से भूमि दान और अन्य आर्थिक संसाधन उपलब्ध कराए जाते थे। इस प्रकार नालंदा की समृद्धि केवल उसकी बौद्धिक परंपरा पर ही आधारित नहीं थी यद्दपि उसे सुदृढ़ आर्थिक और राजकीय समर्थन भी प्राप्त था।

ISSN : 3108-0294

पुरातात्त्विक प्रमाण एवं भौतिक संरचना

नालंदा विश्वविद्यालय के ऐतिहासिक महत्व को समझने में पुरातात्त्विक साक्ष्यों की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा 1915 से 1937 के बीच किए गए उत्खनन कार्यों से नालंदा के विशाल परिसर का पता चला है। इन उत्खननों से अनेक विहार, स्तूप, मंदिर, प्रार्थना स्थल तथा मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं, जो नालंदा की स्थापत्य और सांस्कृतिक समृद्धि को प्रस्तुत करती हैं। नालंदा संग्रहालय में संरक्षित प्रतिमाएं और कलाकृतियां उस समय की कला परंपरा और धार्मिक जीवन की झलक प्रस्तुत करती हैं। हसमुख डी. संकलिया की "The University of Nalanda" एवं बी. नाथ की "Nalanda Murals" इन पुरातात्त्विक अवशेषों के आधार पर नालंदा की संरचना और कला-वैभव का विश्लेषण करती हैं। इन स्रोतों से स्पष्ट होता है कि नालंदा एक सुव्यवस्थित और विशाल विश्वविद्यालय

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
खंड-1, अंक-2 अक्टूबर-मार्च, 2025-26, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

परिसर था जिसमें अध्ययन-अध्यापन, आवास एवं धार्मिक गतिविधियों के लिए अलग-अलग संरचनाएं निर्मित थीं। इस प्रकार पुरातात्त्विक साक्ष्य नालंदा के ऐतिहासिक अस्तित्व और उसके भौतिक स्वरूप को प्रमाणिक आधार प्रदान करते हैं।

प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय का अंतरराष्ट्रीय बौद्धिक प्रभाव

प्राचीन काल में नालंदा विश्वविद्यालय का प्रभाव केवल भारत तक सीमित नहीं था अपितु इसका व्यापक प्रभाव पूरे एशिया में देखा जाता है। ह्वेनसांग और इत्सिंग जैसे चीनी यात्रियों के विवरणों से ज्ञात होता है कि नालंदा एक अंतरराष्ट्रीय शिक्षा केंद्र था, जहां विभिन्न देशों से विद्यार्थी अध्ययन के लिए आते थे। चीन, कोरिया, तिब्बत और दक्षिण-पूर्व एशिया के अनेक विद्वान यहां अध्ययन-अध्यापन और शोध के लिए आते थे। थॉमस वॉटर्स की "On Yuan Chwang's Travels in India" तथा शमूएल बेल की "Buddhist Records of the Western World" इन यात्राओं के ऐतिहासिक महत्व को स्पष्ट करती हैं। इन स्रोतों के अनुसार नालंदा ने बौद्ध दर्शन, भारतीय संस्कृति और ज्ञान परंपरा के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस विश्वविद्यालय शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्वान अपने-अपने देशों में जाकर बौद्ध विचारधारा और भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रचार करते थे। इस प्रकार नालंदा प्राचीन विश्व का एक प्रमुख अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय और बौद्धिक आदान-प्रदान का केंद्र था।

आधुनिक शोध एवं संस्कृति संरक्षण

आधुनिक काल में विभिन्न इतिहासकारों और विद्वानों ने नालंदा विश्वविद्यालय के ऐतिहासिक और शैक्षणिक महत्व का गहन अध्ययन किया है। आर.एस. शर्मा, गोविंद चंद्र पाण्डेय तथा अन्य विद्वानों के शोध ग्रंथों में नालंदा के इतिहास, शिक्षा प्रणाली और सांस्कृतिक प्रभाव का समालोचनात्मक विश्लेषण किया गया है। इन अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि नालंदा प्राचीन भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली का एक उत्कृष्ट उदाहरण था। आधुनिक शोधकर्ताओं ने पुरातात्त्विक, अभिलेखीय और साहित्यिक स्रोतों की सहायता से नालंदा की ऐतिहासिक भूमिका को पुनः स्थापित किया है। इसके अतिरिक्त यूनेस्को द्वारा "नालंदा महाविहार" को विश्व धरोहर स्थल के रूप में मान्यता प्रदान की गई है जो इसके वैश्विक महत्व को दर्शाती है। डिजिटल अभिलेखागार और आधुनिक शोध संस्थानों द्वारा नालंदा से संबंधित स्रोतों का संरक्षण और डिजिटलीकरण भी किया जा रहा है। इस प्रकार आधुनिक शोध और संरक्षण प्रयास नालंदा की ऐतिहासिक संस्कृति को भविष्य की पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

पुनर्निर्मित नालंदा विश्वविद्यालय की भूमिका

समसमायिक वैश्विक परिदृश्य में शिक्षा व्यवस्था केवल ज्ञान के संप्रेषण तक सीमित नहीं रह गई हैं बल्कि वे सांस्कृतिक विरासत, अंतरराष्ट्रीय संवाद, अनुसंधान और सतत विकास के व्यापक आयामों से भी सम्मिलित हो चुकी

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
खंड-1, अंक-2 अक्टूबर-मार्च, 2025-26, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

है। इस संदर्भ में पुनर्निर्मित नालंदा विश्वविद्यालय भारतीय उच्च शिक्षा व्यवस्था में एक महत्वपूर्ण संस्थान के रूप में विकसित हुई है। प्राचीन काल में नालंदा विश्व का एक प्रतिष्ठित ज्ञान का केंद्र रहा था, जहां एशिया के अनेक देशों से विद्यार्थी और विद्वान अध्ययन एवं शोध के लिए आते थे। सातवीं शताब्दी में चीनी यात्री हेनसांग तथा इत्सिंग ने अपने यात्रा-वृत्तांतों में नालंदा की उच्चकोटि की शिक्षा व्यवस्था, समृद्ध पुस्तकालयों और विद्वानों की परंपरा का विस्तृत वर्णन किया है जो की प्राचीन समय के बौद्धिक उत्कर्ष को दर्शाता है। आधुनिक समय में पुनर्निर्मित नालंदा विश्वविद्यालय का उद्देश्य इसी महान शैक्षिक परंपरा को समकालीन आवश्यकताओं के अनुरूप पुनर्जीवित करना है। यह विश्वविद्यालय न केवल भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा को पुनर्स्थापित करने का प्रयास करता है अपितु एशियाई देशों के बीच शैक्षिक और सांस्कृतिक सहयोग को भी सुदृढ़ बनाता है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में इसकी भूमिका बहुआयामी है, जिसमें अंतरविषयक अध्ययन, वैश्विक अनुसंधान सहयोग, पर्यावरणीय चिंतन, ऐतिहासिक अध्ययन तथा सांस्कृतिक संवाद जैसे महत्वपूर्ण आयाम सम्मिलित हैं(राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020)। विशेष रूप से यह संस्थान पूर्वी एशिया, दक्षिण-पूर्व एशिया तथा दक्षिण एशिया के देशों के बीच ज्ञान के आदान-प्रदान का एक सशक्त मंच प्रदान करता है जिससे अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक नेटवर्क का विस्तार संभव हो पाता है। नालंदा विश्वविद्यालय में बौद्ध अध्ययन, ऐतिहासिक अध्ययन, पारिस्थितिकी और पर्यावरण, अंतरराष्ट्रीय संबंध तथा शांति अध्ययन जैसे विषयों पर गहन शोध कार्य संचालित किए जा रहे हैं, जो वर्तमान वैश्विक चुनौतियों के समाधान में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। इस प्रकार यह विश्वविद्यालय प्राचीन भारतीय शिक्षा दर्शन जैसे समन्वय, सहअस्तित्व, ज्ञान साधना और वैश्विक बंधुत्व को आधुनिक शिक्षा प्रणाली के साथ जोड़ने का प्रयास करता है। इसके साथ ही डिजिटल संसाधनों, आधुनिक शोध पद्धतियों और अंतरराष्ट्रीय अकादमिक सहयोग के माध्यम से यह उच्च शिक्षा को अधिक प्रभावी और प्रासंगिक बनाने की दिशा में कार्य कर रहा है। पुनर्निर्मित नालंदा विश्वविद्यालय न केवल भारत की बौद्धिक विरासत का प्रतीक है बल्कि यह 21वीं सदी की शिक्षा प्रणाली में एक ऐसे मॉडल के रूप में भी उभर रहा है जो परंपरा और आधुनिकता के संतुलन को स्थापित करता है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में पुनर्निर्मित नालंदा विश्वविद्यालय की भूमिका केवल एक शैक्षणिक संस्थान तक सीमित नहीं है बल्कि यह वैश्विक ज्ञान-संवाद, सांस्कृतिक कूटनीति और सतत विकास के आदर्शों को सुदृढ़ करने वाला एक महत्वपूर्ण केंद्र बन चुका है।

निष्कर्ष

नालंदा केवल एक ऐतिहासिक शैक्षणिक संस्थान नहीं था बल्कि यह प्राचीन भारत की ज्ञान–परंपरा, सांस्कृतिक आदान-प्रदान तथा वैश्विक बौद्धिक संवाद का एक महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। उपलब्ध यात्रा-वृत्तांतों, अभिलेखों, पुरातात्त्विक साक्ष्यों तथा आधुनिक शोध ग्रंथों के समन्वित विश्लेषण से यह तथ्य सामने आता है कि नालंदा विश्वविद्यालय की संरचना, शिक्षा पद्धति और अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा अपने समय में अत्यंत उन्नत और व्यवस्थित थी।

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
खंड-1, अंक-2 अक्टूबर-मार्च, 2025-26, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

इन स्रोतों के आधार पर नालंदा के ऐतिहासिक स्वरूप और उसकी शैक्षणिक परंपरा को समझना संभव होता है, जो वर्तमान समय में भी भारतीय उच्च शिक्षा व्यवस्था के लिए प्रेरणा स्रोत है।

यात्रा-वृत्तांतों से विशेषकर ह्वेनसांग और इत्सिंग के विवरणों से यह स्पष्ट होता है कि नालंदा विश्वविद्यालय प्राचीन विश्व का एक प्रमुख अंतरराष्ट्रीय शिक्षा केंद्र था। यहां केवल भारत ही नहीं इसके अलावा चीन, कोरिया, तिब्बत तथा दक्षिण-पूर्व एशिया के अनेक देशों से विद्यार्थी और विद्वान अध्ययन करने आते थे। इन स्रोतों में नालंदा की शिक्षा व्यवस्था, पाठ्यक्रम, वाद-विवाद की परंपरा तथा विशाल पुस्तकालयों का उल्लेख मिलता है, जो उस समय के बौद्धिक वातावरण की उच्चता को दर्शाते हैं। नालंदा ने न केवल बौद्ध दर्शन के विकास में योगदान दिया अपितु बहुविषयी शिक्षा और ज्ञान के अंतरराष्ट्रीय प्रसार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

अभिलेखीय स्रोतों जैसे ताम्रपत्रों और शिलालेखों के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि नालंदा के विकास में राजकीय संरक्षण की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। पाल वंश सहित विभिन्न शासकों द्वारा भूमि दान और आर्थिक सहायता प्रदान की गई जिसके कारण नालंदा की संस्थागत संरचना सुदृढ़ बनी रही। इन अभिलेखों से नालंदा के प्रशासनिक ढांचे, दान-प्रथा एवं धार्मिक-शैक्षणिक गतिविधियों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि प्राचीन भारतीय समाज में शिक्षा संस्थानों को राज्य और समाज दोनों का समर्थन प्राप्त था जिसने नालंदा जैसे महान विश्वविद्यालय के विकास को संभव बनाया।

पुरातात्त्विक साक्ष्य भी नालंदा के ऐतिहासिक महत्व को प्रमाणित करते हैं। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा किए गए उत्खनन से प्राप्त विहार, स्तूप, मंदिर, मूर्तियां और अन्य स्थापत्य अवशेष यह प्रदर्शित करते हैं कि प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय का एक विशाल सांस्कृतिक धार्मिक परिसर भी था। इन अवशेषों से नालंदा की स्थापत्य शैली कला परंपरा और दैनिक जीवन के विभिन्न पहलुओं की जानकारी मिलती है। इस प्रकार पुरातात्त्विक स्रोत नालंदा के ऐतिहासिक अस्तित्व और उसके भौतिक स्वरूप को प्रमाणिक आधार प्रदान करते हैं।

आधुनिक शोध ग्रंथों और ऐतिहासिक अध्ययनों ने इन प्राचीन स्रोतों का विश्लेषण करके नालंदा के महत्व को और अधिक स्पष्ट किया है। विभिन्न इतिहासकारों और विद्वानों ने नालंदा को प्राचीन भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली का उत्कृष्ट उदाहरण बताया है कि ज्ञान, शोध और बौद्धिक विमर्श की सुदृढ़ परंपरा विकसित हुई थी। इन अध्ययनों से यह भी स्पष्ट होता है कि दर्शन, तर्कशास्त्र, व्याकरण, चिकित्सा, गणित तथा खगोल जैसे अनेक विषयों का अध्ययन इस विश्वविद्यालय में किया जाता था। इस प्रकार नालंदा बहुविषयी शिक्षा और अनुसंधान का एक आदर्श मॉडल प्रस्तुत करता है।

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
खंड-1, अंक-2 अक्टूबर-मार्च, 2025-26, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

डिजिटल स्रोतों और आधुनिक अभिलेखीय संसाधनों के माध्यम से आज नालंदा से संबंधित ऐतिहासिक सामग्री को संरक्षित और सुलभ बनाने का कार्य भी तेजी से आगे बढ़ रहा है। विभिन्न डिजिटल अभिलेखागार, संग्रहालयों तथा शैक्षणिक संस्थानों द्वारा इन स्रोतों का डिजिटलीकरण किया जा रहा है, जिससे शोधकर्ताओं और विद्यार्थियों को नालंदा के इतिहास और उसकी शैक्षणिक परंपरा का अध्ययन करने में सुविधा प्राप्त हो रही है। समकालीन संदर्भ में पुनर्निर्मित नालंदा विश्वविद्यालय का महत्व भी इसी ऐतिहासिक सांस्कृतिक विरासत से जुड़ा हुआ है। आधुनिक नालंदा विश्वविद्यालय प्राचीन नालंदा की बौद्धिक परंपरा को पुनर्जीवित करने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है। इसका उद्देश्य केवल अतीत की गौरवशाली स्मृतियों को पुनर्स्थापित करना, वैश्विक स्तर पर ज्ञान एवं अनुसंधान और सांस्कृतिक संवाद को प्रोत्साहित करना भी है। आज के वैश्विक परिदृश्य में, जहाँ शिक्षा अंतरराष्ट्रीय सहयोग, सांस्कृतिक समझ और सतत विकास से जुड़ चुकी है नालंदा विश्वविद्यालय इस दिशा में एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान करता है। इस प्रकार नालंदा विश्वविद्यालय का ऐतिहासिक और समकालीन महत्व यह दर्शाता है कि भारत की प्राचीन शिक्षा परंपरा आज भी वैश्विक ज्ञान समाज के निर्माण में प्रेरणादायक भूमिका निभा सकती है।

संदर्भ सूची

1. अल्टेकर, ए. एस. (1944). एजुकेशन इन एसिएंट इंडिया. नन्द किशोरे & ब्रोस।
2. कुमारी, आर. (2025). बिहार के शिक्षा में नालंदा विश्वविद्यालय का योगदान : एक अध्ययन. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइंस एंड एजुकेशनल रिसर्च. 7(1). 993-997 DOI: https://www.doi.org/10.33545/2664984 5.2025.v7.i1l.396
3. कुमारी, पी. और मंडल, ए. के. (2023). प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति एवं नालंदा विश्वविद्यालय. शोध समागम. 6(2). 599-603 https://shodhsamagam.com/uploads/issues_tbl/1684112138raacheen-Bharatiya-Shikshan- Paddhati-ewam-Naalanda-Vishwavidyalaya.pdf
4. चौले जी. सी. नालंदा पास्ट एंड प्रेजेंट
5. दास, एस. के. द एजुकेशन सिस्टम ऑफ़ द एसिएंट नालंदा
6. बेअल,एस. (1884). बुद्धिस्ट रिकॉर्ड ऑफ़ थे वेस्टर्न वर्ल्ड. त्रुब्नेर &
7. भारद्वाज, एन. (2020). *नालंदा का पुरातात्विक वैभव*. सम्यक प्रकाशन.
8. भारती, बी. (2002). *प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति*. भारतीय विद्या संस्थान वाराणसी.
9. मुख़र्जी, आर. के. (1951). एसिएंट इंडियन एजुकेशन. मक्मिल्लन

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
खंड-1, अंक-2 अक्टूबर-मार्च, 2025-26, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

10. यीजिंग. (1896). ए रिकॉर्ड ऑफ़ थे बुद्धिस्ट रिलिजन एस प्रक्टिसेड इन इंडिया एंड द मलय अर्चिपेलागो (जे. तककुसू.ट्रांस.) क्लारेदों प्रेस.
11. यूनेस्को. (2016). आर्कोलोजीकल साईट ऑफ़ नालंदा. https://whc.unesco.org/en/list/1502/
12. वेस्टर्न, टी. (1904). ओन युआन चवांगस ट्रेवल्स इन इंडिया. रॉयल एशियाटिक सोसाइटी.
13. शंकर, आर. और शर्मा, डी. (2025). प्राचीनकालीन नालंदा एवं विक्रमशिला विश्वविद्यालय में ज्ञान परंपरा और बौद्ध धर्म का प्रभाव : एक ऐतिहासिक अध्ययन. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च. 11(5). 542-544 https://www.allresearchjournal.com/archives/2025/vol11issue5/PartG/11-5-117-783.pdf
14. शर्मा, एस.के. (2024). ने प्राचीन भारत में शिक्षा प्रणाली नालंदा एवं तक्षशिला विश्वविद्यालय .शोध मंथन . 509-503 .(3)15 https://anubooks.com/uploads/session_pdf/17295762271.pdf
15. शास्त्री, एच. नालंदा एंड इट्स एपिग्रफिक मटेरियल.
16. शिक्षा मंत्रालय (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार
17. संकलिया, एच. डी.(1934). द यूनिवर्सिटी ऑफ़ नालंदा. बी. जी. पॉल & को. पब्लिशर्स
18. सिंह, के. (2021). नालंदा विश्वविद्यालय का ऐतिहासिक अनुशीलन. शिक्षण संशोधन. जर्नल ऑफ़ आर्ट्स, हुमनितिएस एंड सोशल साइंस. 4(9). 4-7
19. हवलदार, टी. (1959). *बौद्धधर्म और विहार*. बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् पटना.
20. हेनसांग . रिकॉर्ड ऑफ़ थे वेस्टर्न रीजनस (द तंग क्सियु जी).

ISSN : 3108-0294